हिन्दी विभाग

स्नातकोत्तर द्वितीय सत्रार्द्ध

पत्र संख्या – 06

दिनांक 26/09/2020

वैभव कुमार
(अतिथि शिक्षक)

# घनानंद के जीवन परिचय

घनानंद रीतिकाल की रीतिमुक्त स्वच्छन्द काव्यधारा के सुप्रसिद्ध कवि हैं। आचार्य शुक्ल के मतानुसार इनका जन्म संवत् 1746 ई० में दिल्ली में हुआ था तथा संवत 1817 में वृंदावन में इनका देहावसान हुआ। उनका जन्म एक कायस्थ परिवार में हुआ था। घनानंद बाल्यावस्था से ही कविता एवं संगीत के प्रेमी थे।

कहा जाता है कि घनानंद मुहम्मदशाह रँगीले के दरबार में मीर मुंशी थे और 'सुजान' नामक नर्तकी पर आसक्त थे। एक दरबारियों ने बादशाह से कह दिया कि मुंशी घनानंद जी गाते बहुत अच्छा हैं। बादशाह ने घनानंद के गाना सुनने की हठ पकड़ ली। पर वे गाना सुनाने में अपनी अासक्ति का ही निवेदन करते रहे। अंत में बादशाह से कहा गया था कि यदि 'सुजान' को बुलाई जाय तो वे गाना सुनाएँगे। वह बुलाई गई और इन्होंने इसी

और उन्मुख होकर सचमुच गाया और ऐसा गाया की सारा दरबार मंत्रमुग्ध हो गया। बादशाह ने आज्ञा की अवहेलना के अपराध में इन्हें दिल्ली से निष्कासित कर दिया। सुजान ने इनका (घनानंद) का साथ नहीं दिया वहाँ से वृंदावन चले गए और निम्बार्क के संप्रदायाचार्य स श्रीवृंदावन देव से दीक्षा ग्रहण की इनका सखी भाव सूचक नाम 'बहुगुनी' था। घनानंद 'सुजान' को भूल नहीं पाए और अपनी रचनाओं में सुजान के नाम का प्रतीकात्मक प्रयोग करते हुए काव्य रचना करते रहे। घनानंद भगवान श्री कृष्ण के प्रति अनुरक्त रहे, घनानंद मूलतः प्रेम की पीड़ा के कवि हैं। वियोग वर्णन में घनानंद का मन अधिक रमा है। वे प्रेमसाधना का अत्यधिक पथ पार कर बड़े बड़े साधकों साध्यों की कोटि में पहुँच गए थे। यमुना के कछारों और व्रज की वीथियों में भ्रमण करते समय वे कभी आनंदातिरेक में हँसने लगते और कभी भावावेश में अश्रु धारा इनके नेत्रों से प्रवाहित होने लगती है।

घनानंद द्वारा रचित ग्रंथ - सुजानहित, इश्कलता, प्रीतिपावस, वियोगबेलि, यमुनायश, प्रेमपत्रिका, प्रेमसरोवर आदि है। सुजानसागर, विरह लीला, कृपाकंद निबंध प्रमुख रचनाएँ है।

घनानंद जी के काव्य में अपने प्रिय सुजान के प्रति प्रेम की व्यंजना अन्तर्तम मिलती है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार घनानंद ने तो अपने प्रेम के नाप पर बिहारी की तरह न तो थर्मामीटर के पैमाने पर नापा है, न ही बाहरी उछलकूद मचाई है।

घनानंद प्रेम की पीड़ा के अमर गायक है। उनके लिए प्रेम का मार्ग अत्यन्त सीधा, निष्कपट निश्छल है, जहाँ कपट या छल नहीं चलता है।


प्रस्तुतकर्त्ता

बेनाम कुमार (अतिथि शिक्षक)
हिन्दी विभाग
राज नारायण महाविद्यालय हाजीपुर
(BRABU MUZAFFARPUR)
मो०नं० - 8292271041


दिनांक
26/09/2020